ओ३म्

वेदों की खुशबू

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 56	Year 6	Volume 4	January 2017 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

भौतिक इच्छाऐं जंगल की आग की तरह होती है

पुराने समय का एक भजन है

आशा कदे वी बन्दे दियां हुंदियां न पूरियां
तड़पे वधेरा पर हुंदिया न पूरियां।
लख वाला कहंदा मेरे कोल करोड़ होवे,
पर करोड़ होके वी न हुंदियां पूरियां,
तड़पे वधेरा पर हुंदिया न पूरियां।

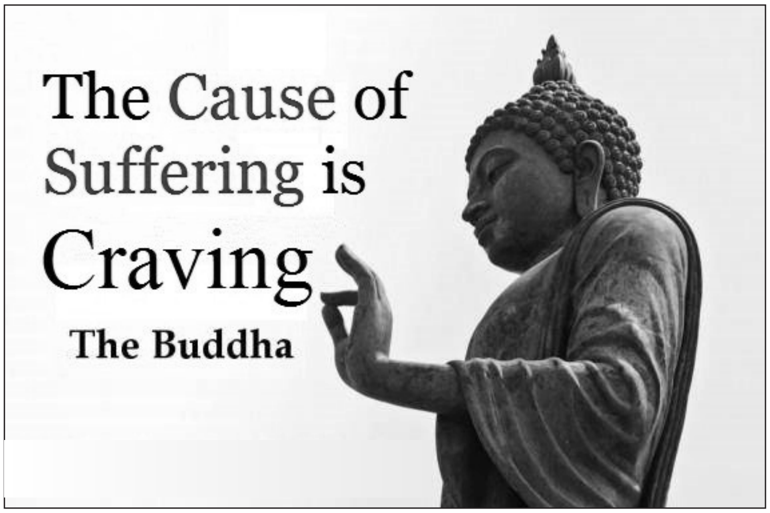

यह भजन बहुत सुन्दर है । ये इस की कुछ पक्तियां है जो कि एक सच्चाई हैं कि हमारी भौतिक इच्छाऐं जंगल की आग की तरह होती है, जो कि बड़ती ही जाती है।

महाभारत की एक कहानी है। राजा ययाती जो कि पांडवों के पूर्वज थे वह अपनी कामवासना की पूर्ती के लिये लगे रहते थे। काम वासना ने उन्हें इस कदर जकड़ रखा था कि जब वह बूढ़े हो गये तो उन्होने अपनी जवानी को वापिस पाने के लिये कई तपस्याऐं की । इन तपस्याओं के परिणामस्वरूप उसे यह वरदान मिला कि उसका यौवन वापिस आ सकता है अगर कोई व्यक्ति उसके बुढ़ापे के बदले में यौवन देने को तैयार हो जाये। उसने अपने बेटे पुरू से इस के लिये आग्रह किया जो खुशी से अपना यौवन अपने पिता को देकर उनका बुढ़ापा लेने को तैयार हो गया। ययाती अपने बेटे का यौवन लेकर अपनी कामवासनाओं की पूर्ती में फ़िर से लग गया। पर जब उसकी सन्तुष्टी न हुई तो उसे यह ज्ञान होने लगा कि यह भौतिक इच्छाऐ तो जंगल की आग की तरह हैं जो एक बार लगने पर बढ़ती ही जाती है। उसने पुरू को उसका यौवन वापिस कर दिया और उसे अपने

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

अनुभव के आधार पर शिक्षा दी की भोग ठीक हैं पर ऐसा न हो कि यह भोग तुम्हें ही भोगने लगे। उपासना और योग इन भोग की प्रवृतियों से उपर उठने का साधन है।

शरीर को प्रकृति से जोड़ने का नाम भोग व चित को उसकी वृतियों से अलग करने कानाम योग हैं । इस लिये यह कहना गलत नहीं होगा कि अपनी भौतिक ईच्छाओं पर काबू पाने का सब से उतम उपाय योग को समझ कर योग को अपनाना है।

ऋषि पतंजली द्वारा बताए अष्टांग योग की आठ सीढ़ीयां हैं––यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधी। पांच यम हैं––सत्य, आहिंसा, अस्तेय, ब्रहमचर्य और अपरिग्रह। इसी तरह पांच नियम हैं––शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर समर्पण यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार हैं वह चित की वृतियों को नियन्त्रण में करने के लिये बुनियाद का काम करतें हैं इनका सीधा सम्बन्ध शरीर व मस्तिक्ष से होता है।

*****

हे परमेश्वर तेरा लाख लाख धन्यवाद आप ने मुझे फिसलने नहीं दिया?

बस का कण्डकटर मुसाफिरों से भरी बस में टिकटें दे रहा था। एक मुसाफिर ने जहां जाना था उस स्थान का किराया 40 रूपये था। मुसाफिर ने 100 का नोट दिया और कण्डकटर ने बकाया मुसाफिर को दे दिया। मुसाफिर ने बकाया राशी गिनी तो उस में 10 रूप्ये अधिक थे। मुसाफिर ने पैसे जेब में रख लिये पर उसका मन बेचैन था।

बस मन्तव्य पर रूकी तो वह व्यक्ति कण्डकटर को दस का नोट वापिस करते हुये बोला––––आपने गलती से दस रूपये अधिक दे दिये। कंडकर ने उस मुसाफिर की तरफ देखा और बोला––––मान्यवर, असल बात यह है कि गलती से नहीं, अपितु मैने जान बूझकर पैसे अधिक दिये थे। आप के प्रवचन मैं अक्सर सुनता हू जिस में बहुत उंचे आदर्शो की बातें आप करते हैं। मैं यह देखना चाहता था कि कि क्या यह बाते दूसरों को उपदेश देने के लिये ही हैं या अपने जीवन में भी आपने इन को अपनाया है। मुझे माफ करना, मैं इस योग्य तो नहीं कि आप जैसे महान व्यक्ति को परखूं पर यह करने से मेरे मन का संशय दूर हो गया है।

मुसाफिर ने कंडकटर की तरफ देखा और बोला––––आप ने कोई गतली नहीं की। इस से तो मुझे यह देखने का अवसर मिला है कि प्रभु भक्ति का मुझ पर कोई असर है भी कि केबल पाठ पढाने और उपदेशों तक ही सीमित है। उसने कंडकर से विदा ली और अकेले में जा कर ईश्वर से बोला––––हे परमेश्वर तेरा लाख लाख शुक्र आप ने मुझे फिसलने नहीं दिया।

यह होती है ईश्वर भक्त की निशानी । ईश्वर भक्त अपने सब कार्य ईश्वर को अर्पण कर देता है ताकि उसके कर्मो में पवित्रता रहे। ईश्वर नाम ही अच्छे गुणों का है और उन गुणों को धारण करना ही प्रभु भक्ति है। सायं कुछ क्षण शांत बैठकर यह सोचें कि आप की ईश्वर भक्ति कितनी सफल है। अगर कहीं फिसल गयें हैं तो फिर संकल्प करें। इसी का नाम अभ्यास है।

*****

जीवन के चार आश्रमों की सफलता की कुंजी

मनुष्य मुश्किल से प्राप्त होने वाली, इस मानव योनी का प्रयोग ठीक प्रकार से करे, इस के लिये हमारे वेदों के ऋषियों ने मनुष्य के जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया है। मनुष्य के जीवन को 100 वर्ष मानकर उसे चार भागों में बांटा गया है। इस में पहले 25 वर्ष को ब्रहमचर्य आश्रम कहा गया है। 25 से 50 वर्ष की आयु के समय को गृहस्थ आश्रम कहा गया है, 50 से 75 वर्ष के समय को सन्यास और 75 से 100 वर्ष के समय को वानप्रसथ आश्रम कहा गया है।

मेरा मानना है कि समय और परस्थिती के अनुसार महान व्यक्तियों और ऋषियों द्वारा कही बातों को भी बदले हुये प्रसंग में देखना ही बुद्विमता है। यह बात आश्रमो की भी है। आज के समय में ब्रहमचर्य आश्रम 30––35 वर्ष तक भी चल सकता है। और यदि आप ने विवाह ही 35 साल की आयु में किया तो गृहस्थ आश्रम 65 साल तक भी हो सकता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि हर एक आश्रम का चक्का एक धुरी के गिर्द घूमता है। अगर वह धुरी ठीक है तो उस आश्रम का उदेश्य भी पूरा होता है परन्तु अगर कमी रह जाये तो यह बाकी आश्रमों के सुखी जीवन को भी प्रभावित करता है।

क्या हैं ये चक्के की धुरियां

अनुशासन ब्रहमचर्य आश्रम के चक्के की धुरी होता है। The foundation of Brahamcharya Ashram is discipline

यह सत्य है कि अनुशासन **ब्रहमचर्य आश्रम के चक्के की धुरी होता है।** ब्रहमचर्य आश्रम शिक्षा और अच्छे संस्कार प्राप्त करने का समय होता है जिस पर हमारा सारा जीवन निर्भर करता है। शिक्षा और अच्छे संस्कार दोनो का सीधा सम्बन्ध अनुशासन अथार्त एक नियमित दिनचर्या से । उदाहरण के लिये किस समय प्रातः उठना है, क्या खाना है कब खाना है और कितना खाना है, कितना समय व्यायाम के लिये देना है, कितना समय पढ़ाई के लिये देना है और कब सोना है। इसी तरह अच्छे संस्कारों का सीधा सम्बन्ध भी अनुशासन से है। अगर अनुशासित जीवन है तो संस्कार अच्छे ही होंगे। अक्सर देखा गया है कि जो शिक्षा अनुशासन के बिना होती वह जीवन को पूरी तरह सफल नहीं बनाती।

Brahmacharya

यदि हम जीवन के इस भाग में अनुशासन से रहना सीख लें तो यह हमारे बाकी जीवन को भी सुखी बनाता है। उदाहरण के लिये, विद्यार्थी जीवन में सिमित घन में रहने की आदत सदैव जीवन में सुख देती है। जब आपके पास जीवन के किसी भाग में आवश्यकता से अधिक धन होगा, तब भी आप सोच विचार कर ही खर्चंगें। इसके विपरीत यदि बिना किसी अंकुश के खर्चने की आदत बन जाती है तो यह आदत जीवन भर बनी रहेगी और यहि जीवन के किसी भाग में खुला धन उपलब्ध नहीं है तो आप गलत ढंग से धन कमाने के साधन भी प्रयोग कर सकते हैं जो कि मन की चैन और परिवार की सुख भाांति को खत्म कर देता है।

गृहस्थ आश्रम की कुंजी है सेवा The corner stone of house holder's life is spirit of service

यहां शब्द 'सेवा' किसी खास कार्य को नहीं पर सेवा की भावना को व्यक्त कर रहा है। यदि आप में सेवा की भावना है तो आप स्वयं ही सेवा के लिये प्रेरित होंगे। चाहे वह अतिथी है, माता पिता हैं या फिर सास ससुर हैं,

Grihastha

पड़ोसी है या कोई अन्जान अपाहिज और जरूरतमन्द। **महात्मा गांधी ने कहा था कि अगर आप में सेवा की भावना है तो आपके जीवन में कोई ऐसा क्षण नहीं जब आप सेवा न कर सके।** गुरू नानक देव ने गुरमुख उसे कहा जो दूसरों की सेवा में लगा रहें। स्वामी दयानंद ने आर्य समाज के नियमों में आर्य उसको कहा जो संसार की सेवा को अपना धर्म माने। सेवा सिर्फ पैसे से या कुछ देने से ही नहीं होती। आप प्यार भरी नजर से भी दूसरों की सेवा कर सकते है, या फिर किसी दुखी हारे को सांत्वना देकर भी सेवा कर सकते हैं। गृहस्थ आश्रम ही सेवा के लिये बना है।

वानप्रस्थ आश्रम

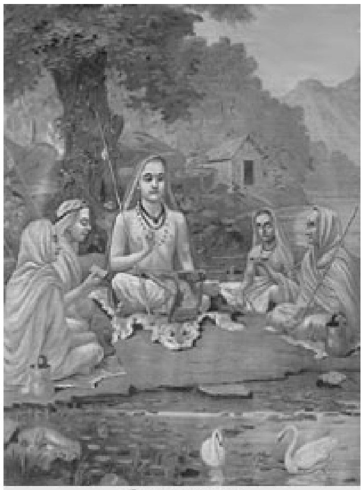

Sannyasa

वानप्रस्थ आश्रम का अर्थ किसी जंगल को प्रस्थान करना नहीं इस का सीधा अर्थ है संसारिक विषयों से अलग हो कर अध्यातमिक विषयों की और लगना। तप और त्यागमय जीवन बिताते हुये प्रभु के सनिघ्य को प्राप्त करना मुख्य उदेश्य होना चाहिये। आज के समय में व्यक्ति जंगल में या बनों में तो नहीं जा सकता पर वह इस संसार में रहता हुआ भी तप, त्याग, निस्वार्थ सेवा के कार्यो से अपने आप को जोड सकता है। यही नहीं अपने आप को ढूंढना self enquiry, जिन मानविय मूल्यों को आप खो गये अनको फिर से स्थापित करना, जो स्वयं पूर्ती के कार्य गृहस्थ जीवन की व्यवस्थता या जिम्मेवारियों के कारण आप पहले नहीं कर सकें, उन्हे करना। पर सब से आवश्यक यह है कि जीवन के इस भाग में आप अपने परिवार का दायरा बड़ायें। आप के परिवार के दायरे में वे सभी आने चाहिये जिन से आप का खून का रिश्ता नहीं व मानवता का रिश्ता है। परन्तु यदि आप वानप्रस्थ जीवन भी उन्ही के लिये बिताते है जिन के साथ गृहस्थ बिताया तो वानप्रस्थ आराम और गृहस्थ आश्रम में कोई अन्तर नहीं रह जाता।

सन्यास आश्रम

सन्यास आश्रम वह है जब कि मानव काम,कोद्ध, लोभ, अंहकार और मोह से बिल्कुल स्वतन्त्र हो जाये। न उसकी भौतिक ईच्छायें हो और न ही पसन्द और ना पसन्द। वह पेट को भरने के लिये तो भोजन करे पर जिब्हा के स्वाद के लिये नहीं। ईच्छाओं से मुक्त व्यक्ति तभी हो सकता है जब वह अपने आप में सन्तुष्ट और तृप्त महसूस करे। आप ने देखा होगा हृदय और पेट का सीधा सम्बन्ध है। जब हृदय तृप्त होता है तो पेट को भी खाने की आवश्यकता मालुम नहीं होती। जब किसी बड़ी उपलब्धी के कारण हम बहुत खुश होते हैं तो भूख वैसे ही नहीं लगती। यह हाल है तृप्त हृदय का। जिस सन्यासी की बहुत भौतिक आवश्यकतायें हों वह सन्यासी कहलाने के योग्य नहीं। इस बारे में महात्मा हंसराज के जीवन की एक घटना याद आती है। सन्यास लेने के बाद वे निस्वार्थ सेवा और आर्य समाज के काम में जुट गये। एक बार जम्मू आर्य समाज वालों ने वार्षिक उत्सव में उन्हें बुलाया। उन्होने एक सप्ताह वहां उपदेश दिये। जब वापिस आने लगे जो वहां के आर्य समाज वालों ने उन्हे 200 रुपया एक लिफाफे में दिया और कहा कि यह आपकी सेवाओं का मूल्य नहीं पर आप के यात्रा व्यय के हेतु है। उन्होने मुस्कराते हुये कहा जब मेरा व्यय ही कोई नही तो यह पैसा किस लिये। मैं पैदल चलता हुआ ही यहां तक पहुंचा हूं और इसी तरह पैदल चलता हुआ ही वापिस चला जाउंगा। रास्ते मे जहां अवसर मिलता है उपदेश दे देता हूं जो कोइ दे देता है खा लेता हूं। यही है सन्यास।

इस तरह हम देखते है एक अनुशासन की दिनर्चया से जीवन को प्रारम्भ करके, गृहस्थ जीवन के धर्म को सेवा भाव से निभाना और उस से निवृति लेकर निस्वार्थकी और अग्रसर होते हुये संसारिक ईच्छाओं से मुक्ति प्राप्ती या जिसे हम समाधी कहें ही वेदों के अनुसार जीवन का लक्ष्य है।

*****

Some of my best business ideas have come on runs:

- Natarajan Chandrasekaran

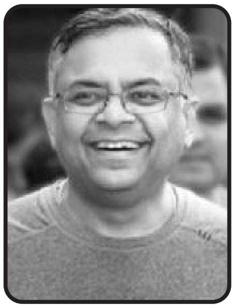

I started running quite late — when I was 44 years old. It started with some concerns about my health. After consulting with my doctor, I went home, had a cup of coffee with my wife and reflected on making a change in my life. Buy a pair of running shoes, Chandra, she said. The next morning at dawn, I exited the front door, as the proud possessor of a pair of brand new running shoes. Puffing and panting, I ran 2k along the sea front, repeating this the next day. I did not have a trainer; my engine ran on will power only. After eight months, I completed my first marathon.

The impact of this was profound in my life. When I go on a business trip anywhere in the world, I go running with employees, friends and business partners. Running gives me the opportunity to reflect; it opens the windows of my mind. Issues become instantly less complex, solutions come to me in a mysterious way. Some of my best business ideas have come during a run.

My job is very demanding, I travel 200 days in a year and constantly change between time zones. However, I make room in my diary for running every day. I am miserable if I don't get to run any day.

Apart from running I am also an avid trekker. There is nothing more humbling than seeing the sheer majesty of nature when walking through the Himalayas. Running builds a great sense of camaraderie — when I am in the starting section, together with 45,000 other runners, there is unique feeling of "oneness" that no other experience can bring. Being a runner has greatly shaped my thinking as a leader.

You may call me a long distance thinker. Running a business is like running a marathon, the similarities are numerous. You have to decide on the length of the engagement, develop endurance to handle setbacks and increase speed when the competition demands it. You have to perform with your heart and your mind; you will not get lost on the way if you have a good road map. You will get nowhere without discipline, this is what I always tell my employees in speeches.

The best advice I can give to novice runners is: prepare well, apply yourself and start moving. Get up early and go for a long distance run, even if you're stressed or tired. You will return more fit than when you left. I feel stronger, healthier and more competitive than ever. Ten years ago, I had never taken part in sports, now have completed some of the world's major marathons.

Mr. Chandra Sekaran has joined head of Tata group

*****

असफलता एक चुनौती है

‘असफलता एक चुनौती है, इसेस्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधारकरो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।
कुछ किएबिना ही जय-जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालोंकी कभी हार नहीं होती।’

स्वर्गीय हरिवंश राय बच्चन

मृत्यु तो अमृत है

मृत्यु को अमृत कहा गया है।परमात्मा का विलक्षण चमतकारी परिवर्तन है। यदि मृत्यु न होती तो घरती नरक बन जाती और यह दुनिया रहने लायक नहीं रहती। मृत्यु ने जीवन को सार्थक बना दिया है। कलपना करो यदि मृत्यु न होती तो यह संसार या हमारे परिवार कैसे होते। बुढ़े, रोगी और असहाय व्यक्तियों की भरमार होती। मनुश्य जीवन से तंग, दुखी और परेशान हो जाता और जीवन नीरस और व्यर्थ लगता। संसार का संतुलन बिगड़ जाता, भाायद खाने को अनाज न होता और सांस लेने के लिये हवा और पीने के लिये जल न मिलता।

यदि मरने का भय और अच्छे कर्मो द्वारा अगले जन्म में मानव चोले की इच्छा न हो तो मानव धर्म , कर्म, सत्संग, साधना, भक्ति, मन्दिर, तीर्थ आदि सब को भूल जाता। मनुश्य बहुत अहंकारी और अत्याचारी हो जाता, संसार के नियम, व्यवस्था, अनुशासन आदि सब फेल हो जाते। परमात्मा द्वारा बुरे कर्म के बुरे फल के भय की कोई आवश्यकता न रहती। जीवन और जगत दोनो बोझ बन जाते। सच पूछो तो मृत्यु ने जीवन का मूल्य बना दिया है। मृत्यु के बिना जीवन का मूल्य कुछ नही रहता। इसीलिये मृत्यु को अमृत कहा गया हैं। मृत्यु सच्ची मित्र है। हमें सदा नई आशाऐं एवं अवसर प्रदान करती हैं। मृत्यु जरा जीर्ण, पुराना, बूढ़ा, व्याधीग्रसत, कटा– फटा, सला गड़ा भारीर लेकर, शिश के रूप में सुन्दर, आकर्शक, भोलाभाला और नया भारीर दे देती है, जिसे सभी देखना, चूमना,उठाना और मिलना चाहते है। इतना बड़ा परिवर्तन संसार की और कोई भाक्ति नहीं करती। ज्ञानी व्यकित के लिये मृत्यु सुखद और अज्ञानी के लिये दुखद होती है।

जो मृत्यु के सत्यस्वरूप को समझ और लेते हैं वे कभी मृत्यु से चिन्तित और भयभीत नहीं होते।

महामृत्जय मन्त्र इसी भाव जो लेकर ईश्वर से प्रार्थना है कि हे प्रभु जब मेरे जीवन की यात्रा जब इस लोक में पूर्ण हो जाये तो मुझे वैसे ही इस देश से छुटकारा मिल जाये जैसे कि पक्का हुआ खरबूजा स्वये ही बेल से अलग हो जाता है।

मृत्यु से दुखद तथा भयभीत हम इस लिये होते है क्योंकि हम केवल भौतिक शरीर को ही सब कुछ समझते हैं, जो कि नश्वर है। वास्तव में हम आत्मा हैं। शरीर तो हमारा साघन है। जब पुराना वस्त्र घिस जाता और फटने लगता है तब हम उसे बदल देते हैं। ऐसे ही जब पुराना शरीर सथ नहीं देता, तब आत्मा उसे बदल लेती है। यही मृत्यु है।

Chinese philosopher Laozi once said: 'Knowing others is wisdom, knowing yourself is enlightenment.'

*****

God's Invisible Hand is Always There to Support us

Swami Ramtirath, after attaining "Sanyas', was imbibed with the intuition of visiting America to spread Indian culture over there. Swamiji planned and arranged to reach America through a sea ship, the cost of which was accepted by an unknown donor but there was no system for his stay in America. He sailed over the ship and was carefree with full and firm belief that God alone will arrange for the whole scenario. American sea port was coming close by and every passenger started gathering their luggage but Swami Ramtirath kept sitting unruffled in the corner.

Suddenly a young American lady came over there. Observing Swami Ramtirath, calm and quiet in this whole scene of hue and cry, an idea came to her to enquire about this pious soul, who is least concerned about the whole world. She approached Swamiji and enquired, "Who are you?' Swamiji responded, "I am a Saint.' That young lady again questioned, "You do not seem to possess any luggage. Where will you stay in America? Have you any acquaintance?'

Swamiji responded, "What's is the need of wealth for a Saint? The whole universe is the Home of Almighty God and now He has introduced me with a social contact.' The young lady astonishingly asked, "With whom?' Swamiji answered, "With your goodself.' Overwhelmed by Swamiji's profound serenity, the young lady escorted Swamiji to her home and she herself arranged for all available facilities for the stay of Swamiji. God's invisible hand is always there to support us. Exactly, if you have faith in Almighty God, fountain of water erupts even in desert.

Dr .Om Parkash Setia,
RMP (Homoeopathy)
#464, Sector 32-A, Chandigarh – 160030
Mobile Phone No. 9872811464

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE vo'; ns
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

सम्पादकिय

क्या खास बात है भारत के सब से बड़े उद्योगिक समूह टाटा ग्रुप के नये चैयरमैन मे

13 जनवरी को चन्द्रशेखर नटराजन भारत के सब से बड़े उद्योगिक समूह टाटा ग्रुप के नये चैयरमैन बनाये गये है। इस की खास बात यह है कि चन्द्रशेखर नटराजन न केवल पहले पारसी समुदाय से वाहर के व्यक्ति है जिन्होने यह पद ग्रहण किया है बल्कि इस से भी खास बात यह है कि 53 बर्शिय चन्द्रशेखर नटराजन की प्रारम्भिक शिक्षा तामिल मिडियम के सरकारी ग्रामिण विद्यालय में हुई हालांकि उनके पिता पेशे से वकील थे। वह तीन मील चलकर स्कूल जाते थे। यही नहीं उनके दूसरे भाई जो कि भारत की सब से बड़ी आई टी कम्पजी टी सी ऐस (TCS) के COO बनाये गये है वह भी इसी ग्रामिण सरकारी विद्यालय से पढ़े है। और तीसरे भाई जो कि बहुत बड़ी कम्पनी के डायरैक्टर है इसी सरकारी विद्यालय से पढ़े। यह बात 1970––80 की है जब कानवेंट और पबलिक स्कूल बहुत खुल चुके थें और उनके बकील पिता भी उन्हें उन स्कूलों में भेज सकते थे।

तीनों भाई सरकारी स्कूलों में पढ़े है, व आज तीनों भाई बड़े औद्योगिक सहूह के हेड है।

उन्होने बताया कि भारू के सालों में जब तीनों भाई चेनई में काम करते थे तो एक ही स्कूटर से तीनों काम चलाते थे। जब कि आज हमने ऐसा कलचर बना दिया है कि बच्चे को कालेज जाने के लिये ही कार चाहिये। और अगर छोटी मोटी नोकरी लग गई तब तो एक लम्बी कार खरीदनी पढ़ती है। यही नहीं परिवार के पांच सदस्यों को पांच अलग कारें चाहिये। यही नहीं उन्होने इसी व्यस्त नौकरी में वेदों के मन्त्र और उनके अर्थ भी सीखे।

चन्द्रशेखर नटराजन बड़े बड़े कोचिंग सैंटरों से कोचिंग लेकर किसी प्रसिद्व IIT से पढ़े इंजिनयर नहीं हैं । वल्कि बिना किसी कोचिंग से आम इंजिनयरिंग कालेज से पढ़े है। मैं फिर दौहरा रहां कि जो भी जीवन में उपर पहुंचते है , अक्सर वे इन नामी कालेजों से पढ़े नहीं होते अपितु अपने चरित्र, परिश्रम और बचपन में मिले संस्कारों द्वारा उपर पहुंचते है।

आज हम ऐसे समय से गुजर रहें जब कि बहुत छोटे पद पर काम कर रहा या बहुत थोड़ी आय वाला व्यक्ति भी अपने बच्चे को सरकारी स्कूल में , चाहे वह स्कूल उसके घर के बहुत पास हो नहीं भेजता । उसका कहना होता है कि सरकारी स्कूल में निम्न परिवारों के बच्चे होते है। In English language there is more diplomatic way to say this----crowd in Government schools is not good दूसरी बात जो सुनने को मिलती है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नहीं होती।

इस बात का सब से विपरीत असर यह है कि हमारे

बच्चे शुरू से ही समाजिक विशमताओं के शिकार हो जातें है। मैं जब पढ़ता था तो चाहे अमीर हो या गरीब, चाहे जिले का कलेक्टर हो या फिर दफतर में काम करने वाला चपड़ासी, चाहे सब्जी बेंचने वाला था या फिर हीरों का व्यापारी, सब के बच्चे एक ही जगह पढ़ा करते थे।

आज के समय की सब से हैरान और हंसाने वाली बात तो यह है कि जिन बच्चों को हम घृणा करते हैं उनको ही पढ़ाने की सरकारी अध्यापक की नौकरी लेने के लिये तो हम 100 दिन वाटर टैंक के उपर चड़ कर सरकार को नौकरी देने के लिये मजबूर करते हैं, पर वही अध्यापक अपने बच्चों को उनके साथ पढ़ने नहीं भेजते। यही हमारे समाज में तेजी से फैल रहे विशमताओं और अपराधों का कारण है।

चन्द्रशेखर नटराजन का उदाहरण दो शिक्षायें दे रहा है। पहला हम इन सरकारी स्कूलों को जिन पर हमारी सरकार करोड़ों रूप्या खर्चती है, घृणा न करें ।जब हम जैसे सम्पन और अच्छे पदों पर काम कर रहे व्यक्ति अपने बच्चों को भेजेंगे तो हालात सुधरेंगे। जब हालात सुधरेंगे तो जो हमारे जैसे भाग्यवान नहीं है, उनके बच्चों का भी भला हांगा।

दूसरी शिक्षा है उनके लिये जो कि छठी कलास से ही IIT जैसे नामी कालेजों में ऐडमिशन दिलाने के उदेश्य से बच्चों का बच्पन छीन कर उन्हें कोचिंग सैंटरों में डाल देते है। अच्छा हो हम बच्चे को एक स्वतन्त्र महौल दें । उसके पास खेलने का भी समय हो, रिश्तो को भी समझें, नाना नानी, दादा दादी के साथ भी समय बिताये। मन्दिरों, गरद्वारो और समाजों में भी जायें। कैरिकयुलर एकेटीविटीज में भी हिस्सा ले ताकी उनकी balanced developmentहो। So that they attain balanced development, which may make them not only some good professional but better human being also which plays a pivotal role in the successful career advancement.

तीसरा हम इस बात को समझें कि अनुशासन विद्याार्थी जीवन **के चक्के की धुरी होता है। यह समय** शिक्षा और अच्छे संस्कार प्राप्त करने का समय होता है जिस पर हमारा सारा जीवन निर्भर करता है। शिक्षा और अच्छे संस्कार दोनो का सीधा सम्बन्ध अनुशासन से है। अनुशासन तभी सम्भव है जब बच्चे को कम खर्चे में, जिसे अंग्रेजी में Frugality कहते हैं, रहने की आदत डाली जाये, चाहे हमारे पास कितना भी पैसा क्यों न हा। अगर अनुशासित जीवन है कम खर्चे में रहना आता है तो संस्कार अच्छे ही होंगे। अक्सर देखा गया है कि जो शिक्षा अनुशासनविहीनहै, होती वह जीवन को पूरी तरह सफल नहीं बनाती।

*****

हे प्रभो ! मेरी वाणी में सत्य हो।

हे प्रभे !मेरी वाणी में सत्य हो। वाणी में सत्य तभी आ सकता है यदि मन सत्य बोलने के लिये कटिबध हो। सत्य बोलने के लिये साहस भी चाहिये और और संकल्प भी ।
जब हम सत्य बोलने के लिये कटिबध होते है, तो सत्य कर्म में भी आ जाता है। इस प्रकार मनसा, वाचा और कर्म तीनों में सत्य निवास करता है।
सत्य से बढ़कर कोई और चीज मन को भाान्ति नहीं देती, झूठ मन की भाान्ति को खत्म कर देता है। इसलिए सत्य का ही आचरण करें।

*****

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता

हमदर्द, डाबर,

वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी,

कामधेनु जल व अन्य

आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins “ VEDIC THOUGHTS” in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

जब भी आप अपने आप को दुविधा में पाते हैं जो आंखें बन्द करके समाज के छोटे से छोटे और गरीब से गरीब व्यक्ति के बारे में सोंचे कि आप के निर्णय का उन पर क्या असर पड़ेगा। आप बहुत से गलत निर्णय लेने से बच जायेंगे।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA
D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

महऋषी दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस पर

क्या यह दयानन्द का आर्य समाज है ?

स्वामी दयानंद क्या थे , इसे समझने के लिये उनके जीवन से जुड़ी इस घटना को दौहराना बहुत आवश्यक है।

फरवरी, 1825 को गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक स्थान में कर्शनजी तिवारी के यहां मूल शंकर नाम के बालक का जन्म होता है जिसे संसार बाद में महऋषी दयानन्द सरस्वती के नाम से जानता है। आपके पिता कट्टर पौराणिक शिवभक्त थे। वह पुराणों से जुड़े सभी कर्मकाण्ड किया करते रहते थे।

पुत्र पर पिता का प्रभाव होना स्वभाविक था। मूलशंकर ने भी अपने पिता की प्रेरणा से 14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन व्रत रखा और व उस व्रत के सभी नियमों वपरम्पराओं का मन वचन–व कर्म से पूरा पालन किया। मध्य रात्रि अपने ग्राम केनिकट के शिवालय में पिता व अन्य भक्तों के साथ जागरण करने का निश्चय किया। पर इस बालक का निश्चय दूसरों से अलग था। जब कि उसके पिता समेत वाकी भक्त तो जहां जगह मिली सो गये थे, मूलशंकर जागता रहा और उसने अपना ध्यान उस शिवलिंग पर लगाये रखा।

मूल शंकर देखता है कि अर्घ रात्री के समय कुछ चूहे बिलों से बाहर निकल कर शिवमूर्ति और शिवलिंग पर स्वेच्छा वस्वतन्त्रतापूर्वक उछल–कूद करते हुए वहां भक्तों द्वारा सजाये व रखे गये प्रसाद को खा रहें हैं। उसके बाल मन में विचार आया कि यदि शिव भगवान सर्वशक्तिमान है तो इन चूहों को भगा क्यों नहीं रहे। गहन सोच में डूब गये और इस निष्कर्ष पर पहुंचं कि यह पत्थर की मूर्ती सारे संसार को चलाने वाले ईश्वर की नहीं हो सकती। इस बात ने उनके मन में क्रान्ति ला दी। पिता को जगा कर उन्होंने मन में दौड़ रहे इन प्रश्नोंका समाधान जानना चाहा । पर पिता सन्तोषजनक जवाब न दे सके। मूल शंकर व्रत वपूजा का त्याग कर घर आ गये और भोजन कर सो गये। इस घटना ने उस बालक को सच्चे शिव व ईश्वर की खोज करने की प्रेरणा दी। कई ग्रंथ पढ़े कई गुरूओं को धारा पर अन्त में वेदों का अध्यन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इस जगत को बनाने वाली और सब का पालन करने वाली भाक्ति जन्म नहीं ले सकती और न ही उसका कोई आकार है। वह तो सर्वव्याप्क है कण कण में समाया हुआ है।

इस घटना से एक बात सामने आती है कि स्वामी दयानंद उन गिने चुने व्यक्तियों मे एक थे जो कि हर बात को तर्क से तोलते थे। मनन करते थे और विश्लेषन करते थे, critical analysis द्वारा उसकी तह तक पहुंचते थे। अगर ठीक नहीं लगे तो उसे स्वीकार नहीं करते। यह उनके जीवन का अंग बना रहा। इसके कुछ उदाहरण दे रहाहूं।

हिन्दू समाज में पुरुष और स्त्री के बीच की असामानता को देखा। ऐसा असामानता जिसने स्त्री को पशु के

तुल्य बना दिया था। वह पढ़ने के अधिकार से भी वंचित थी। मन में प्रश्न आया——ऐसा क्यों? पौराणिक पडितो से बात की तो उन्होने कहा यह सब तो वेदों में लिखा है। वेदों को फिर सो टटोला, उन पडितो से शास्त्रार्थ किये और अन्त में सब को यह सिद्व कर दिया कि वेद तो पुरुष और स्त्री को समान अधिकार देते हैं वल्कि स्त्रीयों का स्थान तो पुरुषों से भी उंचा है।

इसी तरह जाति वाद से ग्रस्त हिन्दु समाज की दुंर्दशा को देखा। मन में प्रश्न आया——एक ही ईश्वर के बच्चों में जन्म के आधार पर इतना अन्तर क्यों? क्यों जन्म के आधार पर ब्राहम्ण कहलाने वाला शूद्रो को पशु के सामान समझता है? पौराणिक पडितो से बात की तो उन्होने कहा यह सब तो वेदों में लिखा है। शास्त्रों को टटोला तो पाया कि जन्मअधारित जातिप्रथा का हमारे भाास्त्रों में कहीं भी स्थान नहीं था। बल्कि एक विद्वान पढ़े लिखे व्यक्ति को ब्राहमण कहा गया था, जो कि किसी खास जाति वाले व्यक्ति का ही अधिकार न हो कर सब मनुष्यों का अधिकार था।

हिन्दु समाज में घर कर गये अन्धविश्वासों और पाखण्डों का critical analysis किया और पाया, यह सब तो पण्डितो द्वारा आम जनता को लूटने का एक ढंग है। ग्रहों पर अधारित ज्योतिष विद्या को अवैज्ञानिक और निराधार घोषित किया।

यदि स्वतन्त्रता कि लड़ाई में भाग लेने वाले 80 प्रतिशत आर्य समाजी थे तो उसका भी कारण यही था कि जब व्यक्ति में चेतना और जागृति आ जाती है तो वह किसी का गुलाम नहीं रह सकता और यह जागृति आई थी दयानन्द के जगाने से।

उनका दूसरा बड़ा गुण यह था कि उन्होने दूसरों की ठीक बात को भी माना न कि अपनी बात पर अड़े रहे। कलकता प्रवास के दौरान केशवचन्द्र सेन ने जब कहा——— स्वामी जी संस्कृत में आपकी बात को कोई नहीं समझेगा आप अपनी बात को हिन्दी में कहें। संस्कृत के महान पंडित होने के बावजूद उन्होने उसके बाद हिन्दी में अपनी बात कहनी प्रारम्भ कर दी। यही नहीं जब अन्तिम वर्षों में उन्होने देखा कि यदि अपनी बात को विदेशों तक ले जानी है जो अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है तो उन्होने अंग्रेजी सीखनी प्रारम्भ कर दी। कहने का अर्थ यह है कि उन्होने विचारों को महत्व दिया न कि भाषा को और आर्य समाज को किसी भाषा के साथ नहीं जोड़ा यही कारण था कि जब उनके तीन बड़े अनुयाई महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय और गुरूदत विद्यार्थी उनकी अक्समात मृत्यु के बाद उनका उपयुक्त स्मारक बनाने के लिये लाहोर में एकत्रित हुये तो डी ए वी की स्थापना करते हुये अंग्रेजी भाषा को उपयुक्त स्थान दिया। आज डी ए वी समूह आर्य समाज की सब से बड़ी सफलता की कहानी ब्यान करता है। मेरे ख्याल में स्वामी दयानंद को जिस व्यक्ति ने सब से ठीक समझाा वे थे **महात्मा हंसराज। वे एक** आदर्श **उतराधिकारी के रूप में उभर कर आये।**

उन्होने पांच यज्ञों का पालन करने को कहा जिसमें की ब्रहमयज्ञ, अग्निहोत्र, पितृ यज्ञ, अतिथी यज्ञ और बलिवेश यज्ञ आते है। वह जानते थे कि हवन हर व्यक्ति के लिये सम्भव नहीं है, इसलिये दैनिक ईश्वर स्तुती के लिये सन्धया का गठन किया।

उनके लिखे सत्यार्थ प्रकाश से एक बात सपष्ट है कि उनका सब से बड़ा उदेश्य हिन्दुओ को हिन्दु धर्म में फैली बूराईयों से मुक्त कर, सही रास्ता दिखाना था। उनका किसी धर्म से कोई विरोध नहीं था परन्तु पाखण्ड और अन्धविश्वास चाहे किसी सर्म्पदाय में हो वह निडर होकर उसके विरुद्व बोले ताकी दुनिया के सभी लोग पाखण्ड और अन्धविश्वासों से मुक्ति पाकर सही रास्ते के पथिक बने।

डस समय के हिन्दु पडित खास कर संस्कृत जानने वाले उनके कटर विरोद्धि थे। जब कि मुसलमान और ईसाई पादरी और अंग्रेज अफसर उनके बहुत प्रशंसक थे। जब लाहोर में उन्हें किसी हिन्दु ने भी इन संस्कृत के पण्डितों के भय से आवास का स्थान नहीं दिया तो एक मुसलमान ने ही उन्हें अपनी कोठी में स्थान दिया और उसी कोठी में रहते हुये उन्होने दो महीने तक प्रवचन दिये।

अब एक नजर डालें आज के आर्य समाज पर

पहला काम—————95 प्रतिशत आर्य समाजों में हवन के सिवा कुछ नहीं होता। इन हवनों में अक्सर पुरोहित

और दो तीन हवन प्रेमी ही होते है। अक्सर पुरोहित मोवाईल आगे रखकर अकेला ही लगा होता है। अधिकतर अधिकारी स्वयं कभी हवन में नहीं आते। दयानंद ने तो हवन को पंच यज्ञों में एक यज्ञ बताया था न कि हवन को ही आर्य समाज बनाने के लिये कहा।

दूसरा काम———संस्कृत प्रचार और पौराणिक विचारधारा का समावेश। आर्य समाज ने अपने आप को हिन्दी और संस्कृत से जोड़ लिया है। आज के आर्य समाज में विद्वान का अर्थ है जो संस्कृत और कर्मकाण्ड जानता है। उसे संस्कृत आनी चाहिये चाहे वह पौराणिक विचारधारा ही बताये। उदाहरण के लिये मैं इस बार जब आर्य समाज में गया तो आचर्य महोदय बोले कि यह भी मान्यता है कि जो मकर संक्रान्ती में मृत्यु को प्राप्त होगा उसे मुक्ति मिलती है । इसी लिये भीष्मपितामह ने 6 महीने मृत्ये शैया पर रह कर मकर सक्रांती का इंत्जार किया। जो थोड़े श्रधालू बैठे थे वह भी झूम उठे। मुझे उठ कर कहना पड़ा कि यह आर्य समाज की वैदिक मान्यताओं के विरूद्ध है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार तो मुक्ति श्रेंष्ठ जीवन जीते हुये उपासना द्वारा ही सम्भव है। इस में आचार्य महोदय की कोई भी गलती नहीं। संस्कृत भाषा है ही पौराणिक और कालपनिक और मनघड़ंत सहित्य से भरी हुई। और फिर हर शब्द के 24 अर्थ होते हैं। जैसा आपका मन करे वैसा अर्थ कर लो। ऐसा ही इन संस्कृत के पडितों ने वेदों के साथ किया है। आज आर्य समाज संस्कृत की पाठशाला बना दिये गये है।

दूसरा उदाहरण——————जनवरी के दूसरे सप्ताह की अखवार में एक आर्यसमाज प्रेमी कापत्र है। वह लिखता है कि मैने आर्य समाज के पुरोहित से 108 बार महामृतन्जय मन्त्र का पाठ करवाया ताकि मेरी रोग से पीड़ित पत्नि के प्राण निकल जायें। आप जानते हैं ऐसे जाप वैदिक मान्यताओं के विरूध है पर आज यह गुरूकुल से आये पण्डित सब कर रहें है।

भारत में 80 प्रतिशत हिन्दु वेदों को मानते हैं पर उन सभी ने अर्थ अलग अलग निकाले हुये है। जिम्मेवार है संसकृत भाषा और यह पंडित। इन आर्ष गुरूकुलों में यही पढ़ाया जाता है। कहने का अर्थ है कि आज के समाज में दयानन्द की तो कोई बात ही नहीं । उनका चित्र अवश्य है। दयानंद की बात करने के लिये साहस चाहिये। ऐसा साहस करेगे तो इन गुरूकुलों के पण्डितों का धन्धा ही चौपट हो जायेगा।

तीसरा काम———गुरूकुलों की सेवा और गुरूकुलों के पण्डों की पूजा। स्वामी दयानंद तो सारा जीवन गुरूडम और पण्डाप्रस्थी के विरूध बोले और आज के आर्य समाजों में हर जगह कोइ न कोई पण्डा कव्जा किये हुये मिल जायेगा।

चौथा————लोक कल्याण के स्थान पर खुद खाओ और पण्डों को मोटी मोटी दक्षिणा दो। आज का आर्य समाज लोक कल्याण और दुखियों की सेवा से बिल्कुल दूर हो गया। किसी भी उत्सव का अर्थ है अच्छा लंगर बना कर खुद ही खाओ और इन पण्डों को मोटी दक्षिणा दो। जब कि दयानंद ने तो संसार का उपकार करने की बात की थी।

यह कर्म काण्ड आर्य समाज में कैसे आया ?

स्वामी श्रद्धानंद ने तो गुरूकूलों की स्थापना इस उदेश्य से की थी कि वैदिक ज्ञान विज्ञान, आदर्शो, मानवता और अच्छे चरित्र वालें नागरिक प्रदान करना। पर कुछ समय बाद ही यह गुरूकुल संस्कृत पढा कर कर्मकाण्ड सिखाकर पण्डें बनाने की फैक्टरी बन गई । कारण किसी मिशनरी स्कून में पढ़ने से हिन्दु धर्म वाला ईसाई नहीं बन जाता और गुरूकुल में पढ़ने से कोई आर्य समाजी नहीं बन जाता। आदमी पढ़े कहीं भी पर मत वही अपनाता है जो कि उसे माता पिता से विरासत में मिलता है। जब गुरूकुलों से सैंकड़ो पढ़े लिखे जवान आने लगे तो प्रश्न उठा कि रोजगार का क्या होगा। रोजगार के लिये आसान ढंग था कि पौराणिक कर्मकाण्ड को अपनाया जाये। इस तरह यह संस्था दयानन्द का रास्ता छोड़कर पौराणिक बन गई। आज हालत यह है कि दूसरे मतों में तो कर्मकाण्ड समाप्त होता जा रहा है और आर्य समाज कर्मकाण्ड का गड़ बन गया है। जो संस्कृत के पडित दयानंद को सब से अधिक बुरा भला कहते थे और उन की जान लेने पर उतारू थे आज आर्य समाज के सब से बड़े विद्वान बन गये है। यह कहना कि यह गुरूकुल स्वामी दयानन्द का मिशन थे यह एक बकवास है। स्वामी दयाननंद तो, इन पण्डो से आम आदमी को छुटकारा दिलाकर, लोगों का अज्ञान दूर करके उन्हे सही रास्ता दिखाना चाहते

थे।

दूसरा—— 1926 में मुसलमानों के खिलाफत अंदोलन का सामना करने के लिये स्वामी श्रद्धानंद समेत बहुत आर्य नेता हिन्दु महासभा में आ गये। आर्य समाज तो स्वामी दयानंद ने हिन्दु धर्म की कुरीतियां दूर करने के लिये बनाया था पर हिन्दु महा सभा में मिलने के बाद ऐजेंडा बदल गया अब तलवार की नोक मुसलमानों के खिलाफ थी जो कि 1947 के खून खराबे के बाद और तेज धार पकड़ गई।

तीसरा——1921 में जब आर ऐस ऐस की स्थापना हुई तो आर्य समाज अपनी चर्मसीमा पर था ।आर ऐस ऐस ने आर्य समाज को अपनी विचारधारा फैलाने के लिये सब से उपयुक्त साधन देखा। पहले आर्य समाजों में शाखायें लगने लगी फिर पदाधिकारियों में वे तरीके तरीके से घुस गये और खिलाफत अन्दोलन ने तो दोनों को बहुत समीप ला दिया। सिर्फ महात्मा हंसराज और आननद स्वामी दूरी बनाने में सफल हुये।

इसलिये आज का आर्य समाज तो विश्व हिन्दु परिषद और आर ऐस ऐस की एक शाखा है। इस में दयाननद की तो केवल फोटो है, आत्मा गाायव है।

यह पडित आर्य समाज में श्राद्धों के विरूध भाशण देते है और स्वयं दूसरों के घरों में श्राद्ध करते है। यही कारण है कि आज हमारे इन आर्य समाजों में कोई नहीं आता, हमारे बच्चे तो बिल्कुल ही नहीं

हम दयानन्द के अनुरूप आर्य समाजी कैसे बन सकते है

ईश्वर के उसी स्वरूप को माने जो स्वामी दयानंद ने आर्य समाज के दूसरे नियम में दिया है.मुख्य नाम ओम् है, जो निराकार, अजन्मा, सर्वान्तरयामी व सर्वशक्तिमान **जिसका न कोई आकार है नही जन्म होता है,** वह कण कण में समाया हुआ है, वह हमारे अन्दर भी है, बात सिर्फ अन्दर झोकने। यही बात अपने बच्चों को अपने पास बिठा कर बतायें ताकि वह इन बाजारी बाबों और भगवानों से दूर रहें।

उपासना, सन्धया और ब्रहमयज्ञ द्वारा ईश्वर तक पहुंचने का प्रयत्न करें। जिस ईश्वर ने हमें सब कुछ दिया है उस का धन्यवाद करना बहुत आवश्यक है। अपनी ही भाशा में घर में बच्चों को सन्धया की आदत डालें। ताकी कठिन समय आने पर हमारे बच्चे किसी बजारी बाबा के चक्कर में न पढ़ जायें। उस मन्त्र का कोई फायदा नहीं जो आप और आपके बच्चे नहीं समझते। बच्चे आने वाले जीवन में उसी को पकड़ेंगे जो उन्हें समझ आता है।

अन्धविश्वासों, ज्योतिष विद्या और पाखण्डों से दूर रहें और यही बात अपने बच्चों को समझायें। यह आज के समय में सबसे महत्त्वपूर्ण है। यदि आप का बच्चा यह समझ गया तो वह आधा आर्य समाजी तो बन ही गया।

दुखियों और बेसहारों की सेवा को धर्म बनायें। संसार के उपकार की बात करें। अपनी ही उन्नती में सन्तुष्ट न रह कर सब की उन्नती के लिये प्रयत्नशील रहें।

हमारे मन वचन और कर्म में सत्य हो।

अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूलों में शिक्षा देते हुये, सारे संसार के साथ जोड़े ताकि वे पीछे न रह जायें। अपनी भाषा के साथ अंग्रेजी का और विज्ञान का ज्ञान बहुत आवश्यक है। वे इन स्कूलों में यहां तक कि ईसाईयों के स्कूलों में पढ़ते हुये भी भारतीय मूल्यों के पुजारी रह सकते हैं और रहते हैं बर्शतिया हम उन्हे समय दें। उनको साथ बिठा कर संध्या करे। सिर मुंडाने से , लम्बी चोटी रखने से, धोती पहनने से कोई आर्य समाजी नहीं बनता। आर्य समाज के नियमों के अनुसार जीवन ढालने से बनता है। आपके बच्चे दक्षिणा देने वाले बने न कि सारा जीवन दक्षिणा समेटने वाले।

सब से आवश्यक यह है कि यह सभी बातें बच्चों को अपने पास बिठा कर बतलायें।

साल में एक दो बार यजमान बना दिया या हवन में दो तीन आहुतियों दिला दी उस से आर्य समाजी नहीं बनेगा। इन चीजों से तो पण्डों का ही भला है।

*****

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर (19 फरवरी) वैदिक थोटस व महर्षि दयानन्द बाल आश्रम द्वारा पी.जी.आई. (PGI) अस्पताल के प्रागंन में लंगर का आयोजन

जो व्यक्ति भी इस यज्ञ में जुड़ना चाहें और आहुती देने के इच्छुक हो कृप्या निम्न स्थानों पर दान दे सकते है।

1. वैदिक थोटस में दिये **Bank Account** में डालकर सुचित का सकते है।
2. वैदिक थोटस के नाम का चैक भेज सकते है।
3. श्री नीरज कैड़ा को दे सकते है।
4. मुझे मेरे घर भेज सकते है। मकान नं. 231, सैक्टर 45–ए, चण्डीगढ़।

आवश्यक सूचना

धन की राशी 200 रूपये से उपर न हो क्योंकि अधिक पैसा चाहे दान ही हो सब बुराईयों की जननी हैं। हम रसीद नहीं दे पायेंगें , कारण समय और साधन नहीं है।

पैसा बच गया तो **carry forwarda** नहीं किया जायेगा, बची राशी महषि दयानंद बाल आश्रम को दे दिया जायेग। अगले उत्सव पर फिर इकठटा करेंगे।

कोई दान सूची प्रकाशित नहीं की जायेगी।

जो नवयुवक व्यक्ति सामान ले जाने के लिये बांटने के लिये सहयोग देंगे उनके हम आभारी होंगे।

भारतेन्दु सूद (92179–70381, 0172–2662870)

A lit candle lights another candle

A lit candle lights another candle. Similarly, only an enlightened person can enlighten another person. There is no other way. Fired by curocity to know the truth, enlightenment is exponential and involves experimenting. There is no text book for it. Without an urge to know the truth, even Vedas can't give you enlightenment. There are many who have read Vedas many a times but are devoid of true enlightenment. They are good so far so to give discourses only. The real fruit of enlightenment is the removal of ignorance and fear, which is a great gift. Enlightened person has no fear. He had learnt to embrace death happily. He will speak only truth and nothing except truth. At the spiritual levelalso, the more we shed our ignorance about who we are and our constitutional position in this universe, the closer we come to God, who is full and eternal enlightenment

Last, enlightenment has no meaning if it is not used to enlighten other people. Then it ia oak tree which is huge but neither gives shade nor bears fruit. Light of knowledge has to be dispersed. It is incumbent upon the enlightened being to guide others selflessly. Whether Socrates, Buddha, Guru Nanak Dev or Maharishi Daynand, they were the true embodiment of enlightened souls and used their knowledge so obtained from enlightenment to remove the ignorance of others

निराशा की स्थिति में अब क्या होगा ये कहने की बजाय सोचें कि अब क्या करना है

सीताराम गुप्ता

दुनिया में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसने अपने जीवन में कभी भी निराशा का दंश न झेला हो। निराशा का व्यक्ति के शरीर और मन दोनों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। धर्मवीर भारती के नाटक ''अंधायुग'' का एक संवाद याद आ रहा है, **''मर्यादा मत तोड़ो / तोड़ी हुई मर्यादा / कुचले हुए अजगर सी / कौरव वंश को / अपनी गुंजलिका में लपेटकर / सूखी लकड़ी सा तोड़ डालेगी।''** निराशा का भी कुछ ऐसा ही प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है। निराशा भी व्यक्ति को अपने आगोश में जकड़कर उसे अंदर से तोड़ डालती है। निराशा उसका उत्साह सोखकर उसे निस्तेज व कांतिहीन बना देती है और अंत में उसे एक विषैले सर्प की भाँति डस लेती है। उसे समाप्त कर देती है।इसके बावजूद हमें निराशा की स्थिति में भी हार न मानकर अपनी कल्पना व सकारात्मक चिंतन को जारी रखना चाहिए क्योंकि कई बार निराशा की स्थिति में हमारे हाथ वो उपयोगी सूत्र लग जाता है जिससे हमारा पूरा जीवन ही बदल जाता है।

समय के साथ–साथ परिस्थितियाँ भी बदल जाती हैं। कुछ लोग बदली हुई परिस्थितियों से तादात्मय स्थापित नहीं कर पाते और निराशा के गहरे भँवर में फँसकर डूबने लगते हैं। परिवर्तन के अभाव में न तो समाज और राष्ट्र ही आगे बढ़ पाते हैं और न व्यक्ति ही। निराशा से बचने के लिए ही नहीं आगे बढ़ने के लिए भी ज़रूरी है कि हम बदली हुई परिस्थितियों को स्वीकार कर उनके अनुरूप स्वयं को भी परिवर्तित करने का प्रयास करें। इसी से हमारा अस्तित्व बचा रह सकेगा। आठ नवम्बर 2016 को सरकार के नोटबंदी के फ़ैसले से देश में कालेधन के रूप में जमा अरबों–खरबों रुपया एक ही झटके में शून्य हो गया। बेशक कालेधन के रूप में जमा ये अरबों–खरबों रुपया ग़ैरक़ानूनी था लेकिन इस कालेधन को जमा करने वालों की निराशा का अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं। इस भयंकर निराशा से बचकर अपना अस्तित्व बनाए रखने का एक ही उपाय है और वो ये कि इस स्थिति को सहजता से स्वीकार कर लिया जाए और भविष्य में पूरी तरह से ईमानदारी से कार्य किया जाए।

बाढ़, भूकंप आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण हज़ारों लाखों नहीं कभी–कभी करोड़ों लोग एक साथ प्रभावित होते हैं। लोग ये सोचकर कि ये केवल उनके साथ नहीं हुआ है अपितु पूरे क्षेत्र अथवा राष्ट्र के लोगों के साथ हुआ है प्रभावित लोग कम दुखी होते हैं अतः उन्हें कम निराशा झेलनी पड़ती है। सरकार के नोटबंदी के फ़ैसले के कारण कालेधन के समाप्त हो जाने पर निराशा से बचने के लिए यही सोचना उचित रहेगा कि यह भी एक प्राकृतिक

आपदा जैसा ही है जिससे करोड़ों लोग प्रभावित हुए हैं। वैसे भी जिन लोगों के पास अपरिमित मात्रा में कालाधन मौजूद था आज कालाधन समाप्त हो जाने के बावजूद उनके पास काम करने के लिए पर्याप्त पूँजी और दूसरे संसाधन भी अवश्य ही होंगे। आठ नवम्बर 2016 को सरकार के नोटबंदी के फ़ैसले के बाद 29 नवम्बर को कालेधन पर आयकर लगाने के इरादे से इनकम टैक्स एक्ट में बदलाव का बिल पास होना भी कम राहत देने वाला नहीं। निराशा से बचे रहने के लिए ये भी कम राहत की बात नहीं।

सुख–दुख, प्रसन्नता–पीड़ा, सफलता–असफलता अथवा संयोग–वियोग खेतों में कुएँ से पानी निकालने वाली राहट की बाल्टियों के समान है। प्रत्येक चक्र में हर एक बाल्टी एक बार पूरी तरह से खाली होकर नीचे जाती है और नीचे से पानी से भरकर पुनः ऊपर वापस आती है। जीवन में भी सही सब होता है। किसी भी प्रकार की निराशा से बचने के लिए इसे समझना और स्वीकार करना अनिवार्य है। निदा फ़ाज़ली कहते हैं :

रात अँधेरी भोर सुनहरी यही ज़माना है,

हर चादर में दुख का ताना सुख का बाना है,
आती साँस को पाना, जाती साँस को खोना है,
जीवन क्या है चलता–फिरता, एक खिलौना है,
दो आँखों में एक से हँसना एक से रोना है।

यदि एक वाक्य में कहें तो जीवन में उत्थान–पतन स्वाभाविक है अतः निराशा भी स्वाभाविक है लेकिन सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण का विकास कर उसे सहजता से स्वीकार करके हम पूरी तरह से निराशा व उसके दुश्प्रभावों व दुष्परिणामों से बच सकते हैं।

संक्षेप में निराशा **से बचने अथवा** निराशा **को दूर भगाने के उपाय :**

सब कुछ ख़त्म हो गया अब क्या होगा ये कहने की बजाय सोचें कि अब क्या करना है?

सबसे पहले व्याप्त निराशा का विश्लेशण करें और उसे दूर करने के उपायों पर सोचें तथा उन्हें व्यावहारिक रूप दें।

अपनी असफलताओं का विश्लेशण कर हार के कारणों का पता लगाएँ व अपनी रुचि के कार्यों का चुनाव कर उनमें आगे बढ़ने का प्रयास करें।

समस्याओं को हल करने की दिशा में अग्रसर हों। बहुत सारी समस्याएँ हों तो एक–एक करके उनसे निपटने का प्रयास करें।

उत्साहहीनता के क्षणों में कुछ नकारात्मक करने की बजाय शांत–स्थिर होकर बैठें और आराम से समय व्यतीत करें।

समस्याओं के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करें। प्रेरणात्मक साहित्य पढ़ें और स्वयं को तरोताज़ा व उत्साहित करने का प्रयास करें।

दूसरों से अधिक अपेक्षाएँ करने की बजाय उन्हें अधिक स्पेस प्रदान करने की कोशिश करें। पति–पत्नी अथवा बच्चों पर अपनी इच्छाओं का बोझ न लादें।

बिगड़े हुए संबंधों अथवा स्थितियों को और ज़्यादा न बिगाड़ें। जहाँ तक संभव हो सके तो उन्हें सम्मानजनक स्थिति या अच्छे परिणाम तक पहुँचाने का प्रयास करें।

यदि असावधानीवश जीवन में कोई ग़लत क़दम उठ गया है तो उसके लिए पश्चाताप करने के बाद उसे भूल जाएँ और सामान्य होकर जीवन में पुनः नई भाुरुआत करें।

सर्वोत्कृष्ट करने की ज़िद छोड़कर कुछ भी करें और उसमें उत्कृष्टता लाने की कोशिश करें।

जीवन में किसी एक बहुत बड़ी ख़ुशी पाने के लिए असंख्य छोटी–छोटी ख़ुशियों की उपेक्षा करना केवल मूर्खता है।

दूसरों से तुलना करके निराश होने की बजाय स्वयं को और बेहतर बनाने की दिशा में अग्रसर हों।

प्रकृतिप्रदत्त अपनी स्वाभाविक कमियों और अल्पज्ञता के लिए हीन भावनाओं को अपने ऊपर हावी न होने दें।

हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने की बजाय कुछ काम करें। किसी रचनात्मक कार्य में व्यस्त रहें।

अकेले एकांत में पड़े रहने की बजाय घर के सदस्यों के बीच रहें और उनसे अपनी समस्याओं के विषय में चर्चा करके उन्हें दूर करने के लिए उनका सहयोग माँगें।

अत्यधिक भौतिकवादी व महत्त्वाकांक्षी न बनें। अपने चारों ओर छद्म या काल्पनिक महानता का घेरा न बनाएँ।

अपने अहंकार को कम करें व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि करने का प्रयास करें।

बदली हुई परिस्थितियों को स्वीकार कर स्वयं को उनके अनुरूप परिवर्तित करने का प्रयास करें। परस्पर विरोधी स्थितियों में संतुलन बनाने का प्रयास करें।

अपने को भावनात्मक रूप से सुदृढ़ बनाएँ और स्वयं में हर वियोग अथवा बिछोह को झेलने व नया स्वीकार करने की क्षमता उत्पन्न करें।

अच्छे–बुरे हर दौर व अच्छाई–बुराई हर स्थिति को स्वीकार कर अच्छे की प्रतीक्षा करें। किसी भी स्थिति में आशा का त्याग न करें। निराशा के कोहरे से शीघ्र मुक्ति मिलने वाली है ये विश्वास बनाए रखें।

*****

जीवन में अवतरित होने वाली समस्याओं के समाधान की ओर अग्रसर होना ही जीवन की वास्तविक परीक्षा उत्तीर्ण करना है

परीक्षा जीवन का अनिवार्य अंग है। यदि हम संपूर्ण जीवन को ही एक परीक्षा कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जीवन वास्तव में एक निरंतर चलनेवाली परीक्षा ही है। हर व्यक्ति इस जीवन रूपी परीक्षा में सफल होना चाहता है। सुकरात ने कहा है कि वो जीवन जीने के योग्य ही नहीं जिसकी परीक्षा न हो चुकी हो। सुकरात के इस कथन से भी परीक्षाओं के महत्त्व का पता चलता है। एक अध्यापक या गुरू अपने शिष्य को सिखाने के बाद उसकी परीक्षा लेता है लेकिन वास्तविक जीवन में हम अनेकानेक परीक्षाओं से गुज़रकर ही जीवन जीने वास्तविक योग्यता प्राप्त कर पाते हैं। जब परीक्षाओं से गुज़रकर ही जीवन जीने योग्य होता है तो फिर परीक्षाओं से घबराने का क्या औचित्य हो सकता है? लेकिन परीक्षा चाहे किसी भी प्रकार की क्यों न हो हर परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए उसकी तैयारी अनिवार्य है। बिना तैयारी के परीक्षा देना ऐसा ही है जैसे बिना तैरना सीखे गहरे पानी में उतरना। बिना

तैराकी सीखे कोई भी व्यक्ति गहरे पानी में तो दूर उथले पानी में भी नहीं उतरता फिर स्कूल, कॉलेज अथवा किसी अन्य प्रतियोगी परीक्षा के लिए अपेक्षित तैयारी न करने का क्या औचित्य हो सकता है?

हां, ये बात ठीक है कि तैराकी पानी में ही सीखी जा सकती है लेकिन कितने पानी में?जीवन की हर परीक्षा के लिए एक तैयारी अपेक्षित है और वो तैयारी प्रारंभ होती है क, ख, ग, घ अथवा ए, बी, सी, डी से। हम प्रारंभ से ही हर विषय को भली–भांति सीखें। जो विद्यार्थी शैक्षिक सत्र के प्रारंभ से ही नियमित रूप से कक्षाओं में जाते हैं, हर रोज़ अपना कक्षाकार्य और गृहकार्य पूरा करते हैं तथा आज का काम कल पर नहीं टालते परीक्षा रूपी मैदान में सफलता के झंडे गाड़ते हैं इसमें संदेह नहीं। मामला चाहे पढ़ाई का हो या स्वास्थ्य का, शादी–विवाह का हो अथवा बच्चों की पैदाइश या परवरिश का, जीवन की सभी परीक्षाओं के लिए तैयारी ज़रूरी है। कहा जाता है कि विषम परिस्थितियों में ही व्यक्ति की वास्तविक परीक्षा होती है। व्यक्ति जीवन में जितनी अधिक विषम परिस्थितियों से गुज़रता है और उनका दृढ़तापूर्वक सामना करता है वह जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में भी उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त करता है।

इसके विपरीत जिन छात्रों ने वर्ष भर नियमित रूप से कार्य नहीं किया होता परीक्षाओं के दौरान उनके हृदय हवा के झोंकों के समान आशा–निराशा के भंवर में उतरते–डूबते रहते हैं। जब कुछ आएगा ही नहीं तो ग़लत तरीक़ों का सहारा लेंगे। किसी से कुछ पूछकर अथवा किसी की नक़ल करके पास होने का प्रयत्न भी करेंगे। भले ही नक़ल करनेवाले ऐसे छात्र परीक्षा में किसी तरह पास हो जाएं लेकिन वास्तविक जीवन में उनसे बड़ा असफल अथवा फेल व्यक्ति नहीं होता। ऐसे छात्र न केवल बाक़ी विद्यार्थियों व अध्यापकों की नज़रों में गिर जाते हैं अपितु स्वयं की नज़रों में भी गिर जाते हैं। उनमें कभी भी आत्म–सम्मान व आत्म–विश्वास नहीं पैदा होता। जीवन रूपी परीक्षा में भी ठीक ऐसा ही होता है। जो जीवन रूपी परीक्षा की तैयारी ठीक से नहीं करते उन्हें भी जीवन चलाने के लिए कई बार ग़लत तरीक़ों का इस्तेमाल करना पड़ता है अथवा दूसरों की नकल करनी पड़ती है। ऐसे लोगों का आत्म–सम्मान समाप्त हो जाता है व उनका आत्म–विश्वास कमज़ोर पड़ जाने से उनके जीवन में उत्कृष्टता नहीं आ पाती।

जहां एक विद्यार्थी को साल भर का समय मिलता है परीक्षा रूपी युद्धक्षेत्र में कूदने की तैयारी के लिए वहीं जीवन रूपी परीक्षा के लिए व्यक्ति का पूरा जीवन ही उपलब्ध है। जीवन रूपी परीक्षा की किताब उठाइए और एक–एक करके सारे पाठ पढ़ डालिए। उस किताब के एक पाठ की परीक्षा देने के बाद किताब का दूसरा पाठ पढ़िए और एक–एक करके उसके सभी पाठों की परीक्षा दे डालिए। जैसे–जैसे जीवन में समस्याएं अवतरित हों एक–एक करके उनका समाधान करते चले जाएं। जीवन में न तो समस्याओं की ही कमी है और न परीक्षा व सफलता के अवसरों की ही। ऐसे में भी कोई काम न करे अथवा असफलता का मुंह देखे तो दोष परीक्षक का नहीं अपितु परीक्षार्थी का अधिक है।जीवन में अवतरित होने वाली समस्याओं के समाधान की ओर अग्रसर होना ही जीवन की वास्तविक परीक्षा उत्तीर्ण करना है। अन्य सभी परीक्षाएं इसी एक बड़े मक़सद को पूरा करने के लिए पास की जाती हैं।

सीताराम गुप्ता
ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं. 09555622323
Email: srgupta54@yahoo.co.in

*****

CHARTIES THAT BRING GOOD

Urvashi Goyal

Vedas advise the man to earn as much wealth as he can but not with questionable means. Again man is advised not to hoard wealth but to make charities with the wealth over and above his needs. Hoarding of wealth itself is an open invitation to all sorts of problems for the one who amasses wealth but desists from making charities. It has the potential to take away his mental peace especially when he needs it most.

Therefore, the best thing is to keep only that much money as one may need for his materialistic and moral well being, both for the present as well as old age, and make charities with the rest to help the deprived and less fortunate in the society. At the same time man has been cautioned not to think that what he gives away in charity is his own, but to consider it as given to him by the divine power, for dispensing to the needy, a conduit between God and the needy to him the charity goes.. He who comes to know this truth is a seer because he rises above his ego and the arrogance generally associated with the donor.

In the **Chandogya Upnishad** also, there is a reference of the highlylearned and fearless Cart driver ***Raikwa*** who on being showered with precious gifts by the king with a sole aim to tempt him to part with his spiritual knowledge tells the king, "Oh! King have neither pride nor vanity in the charities you dispense .Give not something as yours but as given to you by the divinepower for dispensing to the needy. "

Again, it is a highly misplaced notion that charities detoxify the ill-gotten money. If part of the money earned by abominable means is donated it does not lend legitimacy to the wealth acquired by foul means. For example spurious drugmanufacturer can't take solace from the part donation of his huge profits.

Also making charity does not absolve one of the sins and misdeeds committed otherwise. As enunciated in Vedas, he or she will reap the fruits of his sins. No amount of charity can kill our sins.Though, there is no doubt that charity made by him will have its good reward.

Manu has laid great stress on the means to acquire***Artha*** . He has cautionedagainst the inflow of money earned by questionable means, whether it is a home or institution. Ingress of such money is bound to cause devastation rather than the intended good for which money is taken by the Charitable Institutions. At the same time ***Shastras*** also say that the receiver of the charities should exercise utmost prudenceand circumspection in the acceptance of donations. Accept only if you need and accept only that much in charity which is required.

Thus only those charities are worthy of reckoning irrespective of their magnitude which are out of honestly earned money and are with out any intention to earn glory.

If the donor as well as the receiver is particular about this aspect then our religions and charitable institutions will continue to command respect.

*****

सरकार का बहुत ही शर्मनाक कदम

महात्मा गांधी को हम देश का पिता कहते हैं। यही नहीं जहां तक खादी का प्रश्न है खादी और महात्मा गांधी एक अूसरे के पूरक माने जाते हैं। बचपन से ही मैं खादी की दुकानों पर महात्मा का चित्र चरखे के साथ देखते आयें हूं। पर इस सरकार ने महात्मा गांधी का चित्र हटाकर प्रधानमन्त्री का चित्र लगा दिया

देश में खादी और विदेश में विदेशी

जो कि बहुत ही शर्मनाक बात है।

मान लिया यह किसी चमचे का काम है पर प्रधानमन्त्री ने भी तो देखा है और अवश्य पढ़ा होगा। यही नहीं चमचे ने भी अपने नम्बर बनाने के लिये प्रधानमन्त्री को यह भेंट स्वरूप दिया होगा। इसलिये प्रधानमन्त्री भी उतना ही दोशी है।

कहां महात्मा और कहां मोदी। महात्मा के तो जीवन में भी वह सब था जो वह करता था। जब 1932 में गोलमेज कानफरेंस के लिये गये तो उन के तन पर खादी ही था यहां हमारे प्रधानमन्त्री ने खादी के विज्ञापन पर तो अपना चित्र लगाया है और जब अमेरिका गये तो एक करोड़ का सूट पहना था।

ये वही लोग हैं जो कांग्रेस पर इन्ही बातो को लेकर आरोप लगाया करते थे। इन्दिरा गांधी को तानाशाह कहते थे। पर अब क्या हाल है। मैने इन्दिगा गाधी का समय देखा है। चाहे वह तानाशाह थी पर दिल उनका गरीबों में था जब कि गरीब मोदी साहब की सोच में ही नहीं आते।

देश में खादी और विदेश में खादी

*****

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म्।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Fw: Mr H.C.Nanda and Mrs Aruna Nanda solemnising the marriage of orphan girl Kuldeep Kaur. The Nanda family has borne all the expenditure of marriage.

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह — धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह — धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह — धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा — लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Late Mrs Vidyawati

Late smt. Rajinder Rani Verma
W/o bhag chand Verma

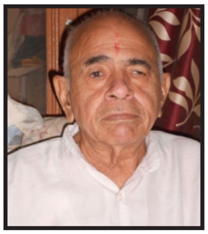

Madan Lal

Naresh

Tarsem

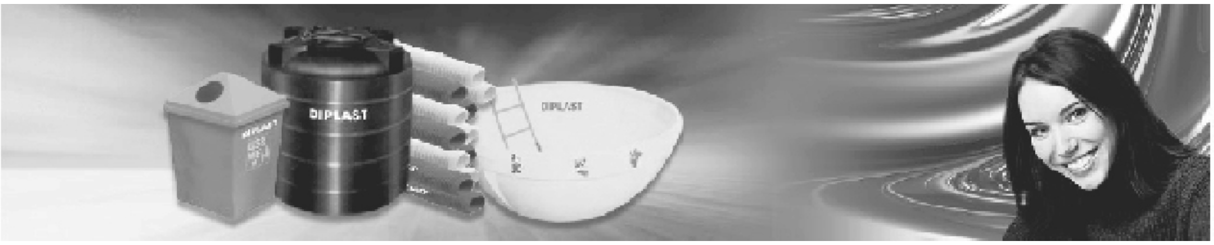

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

DIPLAST

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

---

foKkiu@Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in